सच्चा -सच्चा कुम्भ होता.. संगम का सर्वोत्तम युग संगम
इसमें ही आत्माओं का होता परमात्मा से मंगल मिलन
परमात्मा बाप ही हमें आकर देही-अभिमानी का पाठ पढ़ाते
कोई मनुष्य यह पाठ पढ़ा न सके
हम एक्टर्स आते इस नाटक में अपना-अपना पार्ट बजाने
यह बना बनाया ड्रामा है अनादि, अविनाशी
पुरुषोत्तम बनना तो बनना देही-अभिमानी
एक बाप से अव्यभिचारी बन ज्ञान सुनना
कनिष्ठ बाते जो ईविल बनाती उनको नही सुनना
पुरानी दुःख की दुनियां से वैराग्य लेना
दिव्य बुद्धि की लिफ्ट तीनों लोकों का अनुभव कराती
स्मृति का स्विच सेट करना अमृतवेले यथार्त रिति
जीवन जीने की कला है.. मन को सदा मौज़ में रखना

ॐ शांति
मेरा बाबा